

स्त्री मन की व्यथा : 'लगता नहीं है दिल मेरा'

डॉ. खुशबू

सहायक प्राध्यापक

हिंदी विभाग गंगा देवी महिला महाविद्यालय

पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना। Khushi28914@gmail.com Mob-9968746826

शोध सार- कृष्णा अग्निहोत्री की आत्मकथा 'लगता नहीं है दिल मेरा' पितृसत्तात्मक समाज में जीती ऐसी नारी का दस्तावेज है, जिसमें लेखिका ने व्यक्तिगत प्रसंगों को साहस के साथ वर्णन करने का प्रयास किया है। आत्मकथा के प्रारंभ में वह लिखती हैं मेरा बयान नंगा रहे, एकदम प्राकृतिक... साफ! अहसासों की परतें कुछ इस तरह उधरती जाएं कि उनकी बारीक रेखाएं भी पढ़त से बाहर न रहें। जीवन भर लू-लपेटों के थपेड़े झेलने के बावजूद आत्मा निश्चित ही इन सबसे प्रभावित नहीं होती... मैं मुक्त मन से उसके सामने अपनी बात को विश्वसनीयता एवं प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत कर सकती हूँ। जीवन भर के थपेड़ों को झेलते हुए लेखिका ने परत दर परत कई ऐसे पहलुओं को सामने रखने का प्रयास किया है जिसे पाठक सोच भी नहीं सकता है। कुछ व्यक्तियों के लिए यह एक स्त्री के संघर्ष की गाथा लगेगी तो कुछ के लिए अवैध संबंधों का आख्यान। अपने लेखन के माध्यम से लेखिका ने स्वानुभूति की पीड़ा को व्यक्त करने के लिए आत्मकथा का सहारा लिया है। स्व-विश्लेषण के अंतर्गत उन्होंने पितृसत्तात्मक समाज की विपरीत परिस्थितियों का सामना कर अनेक अप्रकट तत्वों को प्रकाश में लाने का कार्य किया है। इस आलेख में उनकी आत्मकथा में अभिव्यक्त स्त्री-पुरुष संबंधों पर विचार किया गया है।

बीज शब्द- आत्मकथा, संघर्ष, स्त्री, पीड़ा, पुरुष, कृष्णा अग्निहोत्री, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध, मनोविज्ञान, पितृसत्ता, मन, चरित्र।

महिलाओं के लिए आत्मकथा की रचना किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं है। उन्हें हमेशा समाज में दायम दर्जे की स्थिति से गुजरना पड़ा है। स्त्री आत्मकथाओं में सिर्फ लेखिकाओं के निजी जीवन का ब्यौरा मात्र नहीं है, बल्कि ये नारी के मनोविज्ञान को समझने में भी सहायक होते हैं। अपनी आत्मकथाओं के माध्यम से नारियों ने सदियों से चली आ रही मौन को तोड़ा है तथा अपनी खामोशी को गहरे मानवीय अर्थ प्रदान किए हैं।

कृष्णा अग्निहोत्री की आत्मकथा अभी तक दो भागों में प्रकाशित हो चुकी है। उनकी आत्मकथा का प्रथम भाग 'लगता नहीं है दिल मेरा' का प्रकाशन सन् 1997 में हुआ। उसके बाद उनकी आत्मकथा के दूसरे भाग का प्रकाशन सन् 2010 में हुआ। कृष्णा अग्निहोत्री को लेखन के क्षेत्र में अपनी आत्मकथा के कारण विशेष ख्याति प्राप्त हुई है। अपने जीवन के अच्छे-बुरे अनुभवों को उन्होंने अपनी आत्मकथा में बड़े साहस के साथ व्यक्त किया है। कृष्णा अग्निहोत्री की आत्मकथा 'लगता नहीं है दिल मेरा' शीर्षक से ज्ञात होता है कि वह इस भव रूपी संसार से पार उतरना चाहती हैं। लेखिका ने सदैव दूसरों पर विश्वास किया और दूसरों ने इनके सीधे पन की धज्जियां उड़ा दीं। अपने जीवन में लेखिका पग-पग पर धोखा खायी हैं और पूर्णतः टूट चुकी हैं। डॉ. सरजू प्रसाद मिश्र जी का मानना है कि, "लगता नहीं है दिल मेरा वही कह सकता है कि जिसकी जिन्दगी और परिवेश उजड़े दयार सी हो गयी हो।" अपनी आत्मकथा के प्रथम भाग में लेखिका ने अपने जीवन के आत्म संघर्ष को दिखाया है। वे अपनी आत्मकथा में लिखती हैं- "मेरा बयान नंगा रहे... एकदम प्राकृतिक... साफ! अहसासों की परतें कुछ इस तरह उधरती जायें कि उनकी बारीक रेखाएं भी पढ़त से बाहर न रहें। जीवन- भर लू-लपेटों के थपेड़े झेलने के बावजूद आत्मा निश्चित ही इन सबसे प्रभावित नहीं होती... मैं मुक्त मन से उसके सामने अपनी बात को विश्वसनीयता एवं प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत कर सकती हूँ।" एक स्त्री होने के नाते उन्हें किस प्रकार के दुःख झेलने पड़ते हैं,

इस बात की जानकारी उनकी आत्मकथा के प्रथम भाग से मिलती है। कृष्णा जी का विवाह 16 वर्ष की आयु में हुआ। मैट्रिक पास कृष्णा के पति सत्यदेव अग्निहोत्री आई.पी.एस थे, उनके पति को शराब, जुआ और परस्त्री गमिता की बुरी आदत थी। पति के निरर्थक आरोप लेखिका को विचलित कर देते हैं और पति द्वारा शक किये जाने पर वह उन्हें छोड़ना चाहती हैं। अपने विवाह-पूर्व प्रेम को स्वीकार करने के कारण लेखिका को हमेशा सत्यदेव अग्निहोत्री की नफरत का शिकार होना पड़ता था। शादी के पूर्व के रिश्ते को स्वीकार करने के बाद उनके पति की जो प्रतिक्रिया थी, उसके लिए लेखिका ने लिखा है कि "तुम सब ने मेरे गले कुलटा बाँध दी, ये किसी और से प्यार करती है।" लेखिका के इस कथन से भारतीय समाज में स्त्रियों की उस स्थिति का पता चलता है जहाँ विवाह-पूर्व प्रेम करने की कोई स्वतंत्रता नहीं होती है। लेखिका इस स्थान पर जैनेन्द्र के उपन्यास 'त्यागपत्र' की 'मृणाल' के समान लगती हैं। शादी से पूर्व के अपने संबंधों को स्वीकार करने के कारण जिस प्रकार मृणाल का जीवन नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार कृष्णा अग्निहोत्री का जीवन भी विषम परिस्थितियों में चला जाता है। कृष्णा अग्निहोत्री का पति उन पर अत्याचार करता रहा। लेखिका का पति के साथ कभी अच्छा सम्बन्ध नहीं रहा। वह खुद तो महिलाओं से अनैतिक व अवैध संबंध स्थापित करता है, पर पत्नी को हमेशा लांछित, अपमानित और प्रताड़ित करते हुए उसे भोगने में विश्वास करता है। इस तरह कृष्णा जी का वैवाहिक जीवन कभी सुखी नहीं रहा। उनके पति उनको मारते- पीटते थे और जानवरों जैसा व्यवहार करते थे। इससे हम समझ सकते हैं कि सत्यदेव जैसे पढ़े-लिखे उच्च पद पर आसीन पुरुष भी स्त्री के प्रति दुराग्रह पूर्ण भावना रखता है और अपनी पत्नी को प्रताड़ित करने से भी गुरेज नहीं बरतता।

कृष्णा अग्निहोत्री ने तीन शादियाँ कीं। फिर भी उनको एक खुशहाल परिवार प्राप्त नहीं हो सका। सत्यदेव अग्निहोत्री के बाद लेखिका के जीवन में श्रीकांत जोग का आगमन हुआ जो जज थे। अपने पहले पति से निराशा होने के पश्चात्, दूसरे पति से उनकी जो आशाएं थीं वह भी पूरी नहीं हुयी, वहां भी उन्हें निराशा ही हाथ लगी। वे लिखती हैं कि पदोन्नति होते ही उनके तेवर बदल गये और घमंड में चूर होकर लेखिका को अपमानित और लांछित करने लगे। लेखिका ने अपनी साहित्यिक प्रतिभा से समझौता करके अपनी कहानियों को दूसरे पति श्रीकांत के नाम से छपने दिया। फिर भी उनके परिवार का साथ उनको प्राप्त नहीं हुआ। वे लिखती हैं कि "मैं समाज व अपने दूसरे विवाह को लेकर इतनी सजग थी कि जहाँ तक हो सके मैं निर्वाह आँगे होकर कर रही थी... अब वे भूल ही गए थे कि पत्नी कितने संघर्ष से लिखती है और स्वयं ही लेखक बनने के गलत तरीके अपनाने लगे।" लेखन कार्य के लिए लेखिका को हर स्तर पर संघर्ष करना पड़ा। इस बात का पता उनकी आत्मकथा से चलता है। पहले तो उनके दूसरे पति श्रीकांत ही उनके लिखे को अपने नाम से छपवाते थे। उसके बाद लेखिका को प्रकाशकों से भी अपनी रचनाओं को छपवाने के लिए एक प्रकार का संघर्ष करना पड़ा। प्रकाशकों की गलत दृष्टि हमेशा उनके लेखन कार्य को मुश्किल बनाती रही। लेखिका एक स्थान पर अपनी आत्मकथा में लिखती हैं कि "लेखिका होना इतना दुर्भाग्यपूर्ण कार्य नहीं है कि कोई छपने के लिए आपसे गलत रिश्तों की मांग करे।"

उनकी निज की पीड़ा न होकर समुची स्त्री जाति की पीड़ा है। लेखक, प्रकाशक और संपादक छपने जैसे एक सामान्य से कार्य के लिए प्रकाशक का लेखिका को गलत दृष्टि से देखना एक उदाहरण भर है कि स्त्री लेखक को उसके लेखन से नहीं बल्कि उसके देह से देखा जाता रहा है। लेखिका का यह कथन की दुनिया को उन्होंने बड़े नजदीक से देखा। एक अकेली स्त्री किस तरह विभिन्न पुरुषों द्वारा असुरक्षित महसूस करायी जाती हैं इसका उजागर आत्मकथा में उन्होंने किया है। ऐसी विषम परिस्थितियों के बीच भी लेखिका को सुखद अंत की आशा है। जो लेखन के प्रति उनके समर्पण को दिखाता है। वे लिखती हैं कि “मंजुल की रुखाई...नीहार की अपनी व्यस्तता, वैदेही की नई जिन्दगी के कारण मैं इस उम्र में बहुत अकेली पड़ आई। मैंने तो जिन्दगी भर मित्रों, रिश्तों से जब तक बना समझौता ही किया है। एक सीमा के बाद यह समझौता पीड़ा, अभाव बनकर अंतर में दावागिनि पैदा करता आ रहा है...मैं फिर भी आशाओं के जाल बुनती रहूंगी, लेखन के नए मोड़ों पर उड़ती धोखे व विश्वासघात से बहते रक्त को नई अभिव्यक्ति दे दूंगी, शायद मेरे कथानकों का अंत कभी सुखद हो जाए।”⁶

कृष्णा अग्निहोत्री की आत्मकथा ‘लगता नहीं है दिल मेरा’ एक स्त्री के संघर्षों की कहानी है, जहाँ वह बार-बार छली जाती है। यह पितृसत्तात्मक समाज में जीती ऐसी नारी का दस्तावेज है, जिसमें लेखिका ने व्यक्तिगत प्रसंगों को साहस के साथ वर्णन करने का प्रयास किया है। आत्मकथा के प्रारंभ में वह लिखती हैं कि जीवन भर के थपेड़ों को झेलते हुए परत दर परत कई ऐसे पहलुओं को सामने रखने का प्रयास किया है जिसे पाठक सोच भी नहीं सकता है। कुछ व्यक्तियों के लिए यह एक स्त्री के संघर्ष की गाथा लगेगी तो कुछ के लिए अवैध संबंधों का आख्यान।

अपने लेखन के माध्यम से लेखिका ने स्वानुभूति की पीड़ा को व्यक्त करने के लिए आत्मकथा का सहारा लिया है। स्व-विश्लेषण के अंतर्गत उन्होंने पितृसत्तात्मक समाज की विपरीत परिस्थितियों का सामना कर अनेक अप्रकट तत्वों को प्रकाश में लाने का कार्य किया है। बचपन से ही उन्होंने पुरुषवादी मानसिकता को समझने का प्रयास किया। उनकी इस आत्मकथा कथा में घटनाओं का क्रमबद्ध रूप विखंडित कर नजर आता है। क्योंकि कुछ प्रसंग जिन्हें पहले आना था, उनका वर्णन बाद में आता है। इस अभिव्यक्ति के लिए उन्होंने बहुत ही खतरे उठाए हैं। जो भी हो आत्म कथाकार के साहस की दाद देनी होगी कि उसने अपनी जिंदगी के स्याह उजले पन्नों को उलटने की हिम्मत जुटाई। यह कोई मामूली बात नहीं। इसमें अनेक खतरे निहित हैं, लेकिन कृष्णा जी ने ये खतरे उठाए। इस जोखिम की कड़ी में उन्होंने प्रथम पति, द्वितीय पति, पिता, भाई एवं अनेक साहित्यकारों की प्रतिक्रियाओं का वर्णन किया है। पुरुष की वासना दृष्टि के कारण नारी योनि सदैव खतरे में ही रही। कृष्णा अग्निहोत्री इसकी ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहती है – “लड़की का कोमल बचपन भी क्या पुरुषों से सहन नहीं होता, वो उसे भी अपने गंदे सुख हेतु चीर देने को आतुर रहता है।”⁷ लाल कुंवर नाम के पुलिस कांस्टेबल पर कृष्णा के घरवाले भरोसा करते हैं। बच्चे भी उसे लालू मामा कहकर उससे कहानियाँ सुनाने का अनुरोध करते हैं, वह छोटी लड़कियों के साथ गंदी हरकतें करता है। कृष्णा जी बचपन की यादें सुनाते हुए कहती हैं- “लाल कुंवर की नीयत ठीक नहीं थी। वह दूध पिलाकर हमें सुला देते हैं और हमारे हाथों में अपने गुप्तांग को पकड़ा देता। एक बार अर्धनद्रा में मैंने उसे झटक दिया जब उसने शकुंतला को दूसरे कमरे में ले जाकर कुछ करना चाहा...वो चिल्लाई, मैंने लाल कुंवर को उस पर झुका देखा तो लालकुंवर के बाल पकड़कर खींचना शुरू कर दिया और चिल्लाई।”⁸ ‘भ’ नामक उनका एक रिश्तेदार कृष्णा को तंग कर उसके साथ नाजायज रिश्ता बनाने की कोशिश करता है। वह एकांत पाते ही, कृष्णा को आलिंगन बद्ध करता है। कृष्णा जी ने अपनी आत्मकथा में रिश्तेदारों, परिचितों, नौकरों द्वारा किये जाने वाले अत्याचारों को चित्रित करते हुए

स्पष्ट किया है कि नारी की इज्जत हमेशा खतरे में होती है। यहाँ तक कि पिता के मित्र भी जो पिता तुल्य होते हैं वे भी लेखिका पर बुरी नजर डालते हैं, इस सम्बन्ध में लेखिका लिखती है कि “पिता के मित्र, बेटे समान लड़की को खसोटने की मुद्रा में रहते थे कितने विश्वास से मेरे पिता मुझे उन्हें सौंप आए थे।”⁹ कृष्णा ने बचपन से ही पुरुष से असुरक्षा का अनुभव किया। घर में काम करने वाले नौकर तक ने धिनौनी हरकत करने से गुरेज नहीं किया। लेखिका बताती हैं कि “छोटी बुआ का जवान नौकर ऊपर ही रहता था। जो भी लड़की खेल-खेल में पिछले कमरे में छुपती, वह उसे पकड़ कर देर तक गाल रगड़ कर चूम लेता। सबसे पहले जनको... उसके बाद जनको ही वहाँ हमें छुपने को प्रेरित करती। सबसे बुरी बात मुझे यह लगी कि वह हम छह- सात वर्ष की मासूम बच्चियों को नंगा करके अपने ऊपर सुला लेता.. जब मेरी बारी आई तो मैंने विरोध किया और डाटा कि तुम गन्दा काम करते हो, मैं मां से कह दूंगी। वैसे सच कहूँ तो जिज्ञासा वंश दो- चार दिन तो मैं खामोशी से उसे यह सब करते देख सहम ही गई। कभी किसी बड़े ने ये नहीं समझाया था कि तुम अपना शरीर किसी को छूने मत देना...और वह तो घर का विश्वस्त नौकर था।”¹⁰ इससे स्पष्ट होता है कि पुरुष की मानसिक विकृति लड़कियों के बालपन को ही पूरी तरह खराब कर देती है और उनके मानस पटल पर एक गहरा अवसाद, भय और असुरक्षा का भाव पैदा कर देती है जिसको वह आजीवन झेलती रहती है। यह कहानी सिर्फ कृष्णा जी की नहीं बल्कि हर उस लड़की की है जो बचपन से ही किसी न किसी तरह शोषण का शिकार होती है। लेखिका ने बहुत साहस के साथ जीवन के कटु एवं वीभत्स अनुभवों को लिखने की हिम्मत दिखाई है, जबकि ज्यादातर महिलाएं इज्जत के डर से ऐसी बातों को छुपा देती हैं। यहाँ यह देखा जा सकता है कि एक स्त्री के लिए उसका शरीर इतना बड़ा अभिशाप बन जाता है कि पारिवारिक एवं आत्मीय संबंधों को कलंकित करने से भी पुरुष लेश मात्र भी संकोच नहीं करता। उनके लिए न रिश्तों की कोई मर्यादा महत्त्व रखती है न उम्र की कोई सीमा। स्त्री तो स्त्री बच्चियाँ भी उनके लिए देह हैं जिन्हें वे भोगना चाहते हैं।

तमाम कटु अनुभवों के बावजूद लेखिका के जीवन में सहयोग करने वाले साहित्यकारों और मित्रों के व्यवहारों का वर्णन उनके द्वारा किया गया है। अपने पहले पति से अलग होने के बाद लेखिका खंडवा अपने मायके वापस आ गयी थी। लेकिन उनके भाई ने उन्हें घर से बाहर निकाल दिया। ऐसे समय में हंस चाचा ने उनकी मदद की जिसका दृष्टान्त देखा जा सकता है- “मैं हंसकुमार चाचा के प्रति बहुत आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे भयानक झंझावती वातावरण में अपने घर आश्रय दिया। उस समय हंस कुमार जी का संयुक्त परिवार था, सारा खर्च चाचा ही चला रहे थे। भाई ने जब मुझे बरसाती रात में आश्रयहीन किया तो चाचा जी ने ही मुझे अपने गृह में स्नेह से रखा। मेरे व मेरी बच्ची के लगभग दो माह पूर्ण शांति व सुख से वहाँ बीते। मैं विमला भाभी के बगल वाले उस कमरे में ठहराई गई, जहाँ पहले कक्कू रहती थी, रात्रि में जब मैं वहाँ आयी तो रात दो बार विमला भाभी ने झाँककर देखा था कि मैं कमरे में ही हूँ। आत्महत्या का तो प्रयास मैं नहीं कर रही।”¹¹ यह कड़वा सच है कि यदि चाचा जी उस समय ना होते तो मुझे आश्रय की समस्या भोगनी पड़ती। हर बेटे के लिए उसके पिता बहुत अजीब होते हैं। अपनी बेटे के लिए सर्वस्व देकर उसकी खुशियाँ खरीदना चाहते हैं। अपने पिता के बारे में वे लिखती हैं- “कितना प्यार पाया मैंने पिता का, जिन्हें मैं उनके जीते जी कुछ भी संतोष न दे सकी। मैं एक ऐसी गुड़िया थी, जिसे प्यार से संवारा गया हो, जो जीवन के खतरों व भयानक तूफान से अपरिचित थी।”¹² पिता के जाने बाद लेखिका ने असंख्य दुःख झेले। लेखिका के जीवन में जो अच्छे पुरुष आये उसमें वे अपने दोनों देवों का जिक्र करती हैं धर्मदेव और नामदेव जिन्होंने उन्हें

जीवनपर्यंत भरपूर स्नेह और समर्थन दिया। जब लेखिका बनारस में रह रही थी तब रुद्रजी उन्हें 'शाशिव्रता विवाह' पढ़ाने आते थे वे बहुत अच्छा पढ़ाते थे। लेखिका लिखती हैं कि कई वर्ष बाद जब उनकी कहानी 'धर्मयुग' में रुद्र जी ने पढ़ी तो लिखा था- "मुझे गर्व है तुम पर।"¹³ गुरु को अपने शिष्यों की उपलब्धि पर हमेशा ही गर्व होता है।

कृष्णा जी के जीवन में उन्हें कुछ अच्छे मित्र मिले जिन्होंने उनकी साहित्यिक तौर पर और अन्य मदद करने में कभी कोई कोताही नहीं की। अपने मित्र आलोक के लिए वे लिखती हैं कि आलोक मेरे लिए बहुत ही ईमानदार मित्र के रूप में उभरे। मैं सोचने लगी थी कि यदि कभी मुझे जीवन के किसी मोड़ पर आत्मनिर्भर बनने की आवश्यकता अनुभव हुई तो वे मुझे प्रत्येक प्रकार का सहयोग देंगे। यह स्वीकृत सत्य है कि मेरे मन में आलोक के प्रति गहरा विश्वास था। इसी प्रकार वे अपने दूसरे मित्र डॉक्टर वीरेंद्र सक्सेना को एक सहृदय मित्र के रूप में याद करते हुए अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती है। डॉक्टर वीरेंद्र सक्सेना मेरे ऐसे मित्र रहे हैं जिन्होंने अपनी सीमाओं के साथ हमेशा मेरा साथ दिया है। मेरी पुस्तकों की समीक्षा लिखी। मुझे संपादकों और प्रकाशकों के पास ले गए। मानव संसाधन विभाग से हैदराबाद व कई जगह दो बार विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में भिजवाया। लेखन व जीवन में जो समस्याएं रहीं वो सुनते हुए सुझाव भी देते रहे। उन्होंने जो भी सहयोग दिया वह निस्वार्थ रहा। उनके सहयोग का पलड़ा भारी है। मैं तो केवल छोटा मोटा स्नेह व्यवहार ही उन्हें दे सकी। इस आत्मकथा में लेखिका ने एक पुरुष आईएएस ऑफिसर के बारे में लिखा है जिसका नाम है सुशील वर्मा। वे लिखती हैं- "दूसरे दिन ही मैं सुशील वर्मा जी से मिली। एक आईएएस ऑफिसर इतना सरल, सहज एवं सहयोगी हो सकता है क्या? मैं उनके नम्र व्यवहार से पानी-पानी हो गई। उन्होंने बताया कि वे अग्निहोत्री जी के बैच के ही हैं और खंडवा के अपने कार्यकाल के दौरान वे पिताजी के अच्छे मित्र थे। मेरे बिना कुछ बोले उन्होंने कहा, 'तुम कृषि विभाग मत छोड़ो, जो भी समस्या है वे हल हो जाएंगी। मैं स्वयं गुप्ता जी से बात कर लूंगा।' लेकिन मैंने शिक्षा विभाग ही में वापस जाने की इच्छा प्रकट की। तब उन्होंने कृष्णन से फोन पर कहा कि इनकी ये सर्विस काउंट होना चाहिए और देखें की ये लेडी किसी प्रॉब्लम न फंसे। सुशील वर्मा ने मुझ पर अपनी सहायता की गहरी छाप छोड़ दी। इसके पश्चात उनका विभाग बदल गया और वे मुझे एमपी बनने के पश्चात भोपाल में मिले और उस समय भी उन्होंने मेरी मदद की।"¹⁴ इस प्रकार सुशील जी एक सुलझे हुए श्रेष्ठ मानसिकता वाले पुरुष के रूप में एक अच्छा उदाहरण पेश करते हैं। ऐसे पुरुषों की वजह से स्त्रियों का पुरुष पर विश्वास बना रहता है और मन में सम्मान की भावना जाग्रत होती है, लेकिन ऐसे पुरुषों की संख्या बहुत कम है। पंडित विश्वनाथ प्रसाद मिश्र जी के बारे में वे कहती हैं - "पंडित विश्वनाथ प्रसाद जैसे सहृदय नम्र विद्वान अब कहाँ हैं? मिश्र जी ने मुझसे कहा, 'तुम डी. लिट्. कर डालो, क्यों विषय में खमीर डाल रही हो।' उनका स्नेह- आशीर्वाद उनके जीते जी मुझे मिलता रहा।"¹⁵ अपने शोध-निर्देशक डॉ. शिव मंगल सुमन के बारे में वे कहती हैं कि उन्होंने शोध कार्य में उनकी पूर्ण रूप से मदद की जब भी उन्हें किसी सुझाव की आवश्यकता होती वे अवश्य करते। वे लिखती हैं- "निर्मल स्नेह से सुमन जी ने मुझे अभिभूत रखा। वे कहते थे 'तुम पहली स्त्री हो जो मेरी मित्र हो'। सुमन जी मेरे किसी भी पत्र पर तुरंत प्रतिक्रिया देते। मीटिंग में भी जा रहे सुमन जी रुक कर मेरी बात सुनते, दस्तखत करते और मेरी सहायता कर देते।"¹⁶ नई कहानी में अमृत राय जी ने लेखिका की मदद की उन्होंने उनकी अच्छी कहानियां प्रकाशित की जैसा कि आत्मकथा में लिखा गया है- "नयी कहानी में अमृत राय जी ने निःसंदेह मेरी अच्छी कहानियां प्रकाशित की, उन पर बढ़िया टिप्पणी भेजी। जब मिले तो बेहद स्नेह व आत्मीयता से बात की और सम्मान व्यक्त किया।"¹⁷

इस प्रकार देखा जा सकता है कि व्यक्तिगत जीवन में उन्हें जीवनसाथी का सहयोग भले ही न मिला हो, तमाम चरित्रहीन और लफंगे पुरुषों के साथ उनका अनुभव बहुत बुरा रहा। लेकिन पिता के अलावा उन्हें बहुत से ऐसे लोग मिले जिन्होंने उनके पारिवारिक और साहित्यिक जीवन का आसान बनाया।

आज हमारे देश ने प्रत्येक क्षेत्र में विकास किया है, लेकिन स्त्री के प्रति सोच नहीं बदली। समाज अकेली रहने वाली स्त्रियों पर तरह-तरह के लांछन लगाता है। उसके चरित्र पर उंगली उठाने पर वह रंचमात्र भी नहीं झिझकता है। कृष्णा जी लिखती हैं कि, "मैंने तपस्या जैसा जीवन जिया परन्तु मेरे अपनों व नगर के कुछ सभ्रांत लोगों ने मेरा यहाँ जीना असम्माननीय बनाने का ही कुचक्र रचा... मेरी ओर सहयोगी हाथ शायद एक या दो हों, पर मुझे तोड़ने वालों की यहाँ भीड़ है, पर यह मेरी कर्मभूमि है।"¹⁸ इस सम्बन्ध में अरविन्द जैन जी का कथन समीचीन है कि, "वह अपने आपको विश्लेषित करने के बाद इन गहरे अहसासों को दफन नहीं कर सकी और अपनी मीठी- खट्टी स्मृतियों व अनुभवों को यथावत रख दिया। कहने की जरूरत नहीं कि वे राष्ट्रीय स्तर की लेखिका हैं।"¹⁹ अपनी आत्मकथा की भूमिका में वे स्वयं लिखती हैं, "मैंने तो जिन्दगी में यह अहसास किया था कि मुझे अहसास कराया गया कि अकेली रहने वाली महिला पर प्रत्येक पुरुष अपना अधिकार जमाना चाहता है। किसी की दृष्टि उसके रूप, जायदाद तो किसी की नजर शरीर पर रहती है। प्रगति के नगाड़े बजाकर इक्कीसवीं सदी तक पहुँचाने वाला भारतीय पुरुष समाज अब भी बुद्धिजीवी, कलाकार, प्रतिभाशील महिला और साहित्यकार को वास्तविक सम्माननीय दृष्टि से नहीं देखता। उसके लिए वह इस्तेमाल की वस्तु है, नाटक, प्रेम, बहकावा और जोर जबरदस्ती से वह अपने अधीन करना चाहता है। समाज की संरचना में अभी तक यह सम्भावना नहीं है कि वह मेरी जैसी तिल-तिल गलकर साहित्य सृजन करने वाली स्त्री को भी क्षणिक सुखों का माध्यम न माने। इस समाज की दृष्टि में हमें चरित्रहीन करार देने का हर अंदेशा छुपा रहता है।"²⁰ इस प्रकार हम देख सकते हैं कि एक अच्छी लेखिका और विदुषी होने के बावजूद कृष्णा जी को एक अच्छा जीवनसाथी नहीं मिल पाया, हालांकि उन्होंने संबंधों को निभाने की यथासंभव कोशिश की लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। जीवन में ज्यादातर पुरुषों ने उनको छला जिससे उनके अन्दर घोर निराशा और अकेलापन घर कर गया। इनकी आत्मकथा स्त्री पुरुष संबंधों की पड़ताल करते हुए एक जीता जागता दस्तावेज नजर आती है।

सन्दर्भ सूची-

1. डॉ. संरजू प्रसाद मिश्र, हिंदी लेखिकाओं की आत्मकथाएं, पृष्ठ 69
2. कृष्णा अग्निहोत्री, लगता नहीं है दिल मेरा, पृष्ठ 09
3. वही, पृष्ठ 229
4. वही, पृष्ठ 275
5. वही, पृष्ठ 327
6. वही, पृष्ठ 325
7. वही, पृष्ठ 39
8. वही, पृष्ठ 32
9. वही, पृष्ठ 30
10. वही, पृष्ठ 21
11. वही, पृष्ठ 74
12. वही, पृष्ठ 94
13. वही, पृष्ठ 132
14. वही, पृष्ठ 218
15. वही, पृष्ठ 237
16. वही, पृष्ठ 242
17. वही, पृष्ठ 315
18. वही, भूमिका, पृष्ठ 08
19. अरविन्द जैन, औरत : अस्तित्व और अस्मिता पृष्ठ 143
20. कृष्णा अग्निहोत्री, लगता नहीं है दिल मेरा, पृष्ठ 08